



राजपत्र, हिमाचल प्रदेश

(असाधारण)

हिमाचल प्रदेश राज्य शासन द्वारा प्रकाशित

शिमला, सोमवार, 11 फरवरी, 2002/22 मार्च, 1923

हिमाचल प्रदेश सरकार

विधि विभाग
विधायी (अंग्रेजी) शाखा

अधिसूचना

शिमला-2, 11 फरवरी, 2002

संख्या एल० एल० आर०-डी० (6)-22/2001-लैज.—हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल, भारत के संविधान के अनुच्छेद 200 के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए दिनांक 4-2-2002 को अनुमोदित हिमाचल

प्रदेश (सड़क द्वारा कतिपय माल के वाहन पर) करधान संशोधन विधेयक, 2001 (2001 का विधेयक संख्यांक 19) को वर्ष 2002 के अधिनियम संख्यांक 3 के रूप में अनुच्छेद 348 (3) के अधीन उसके प्राधिकृत पाठ सहित हिमाचल प्रदेश राजपत्र (असाधारण) में प्रकाशित करते हैं।

आदेश द्वारा,
H.P.

रामेश्वर शर्मा,
सचिव (विधि)

हिमाचल प्रदेश (सड़क द्वारा कतिपय माल के वहन पर) कराधान संशोधन अधिनियम, 2001

(राज्यपाल महोदय द्वारा तारीख 4 फरवरी, 2002 को यथा अनुमोदित)

हिमाचल प्रदेश (सड़क द्वारा कतिपय माल के वहन पर) कराधान अधिनियम, 1999 (1999 का 16) का और संशोधन करने के लिए अधिनियम।

भारत गणराज्य के बावनवें वर्ष में हिमाचल प्रदेश विधान सभा द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :—

1. इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम हिमाचल प्रदेश (सड़क द्वारा कतिपय माल के वहन पर) कराधान संशोधन अधिनियम, 2001 है।

1999 का 16. 1999 (जिसे इसमें इसके पश्चात् "मूल अधिनियम" कहा गया है) की धारा 2 में खण्ड (घ) में, "छकड़ा, पशु और मानवीय अभिकरण द्वारा या किसी अन्य साधन" चिन्हों और शब्दों के स्थान पर "या छकड़ा" शब्द रखे जाएंगे। धारा 2 का संशोधन।

3. मूल अधिनियम की धारा 3 की उप-धारा (1) में, "छकड़ा, पशु और मानवीय अभिकरण द्वारा या किसी अन्य साधन" चिन्हों और शब्दों के स्थान पर "या छकड़ा" शब्द रखे जाएंगे। धारा 3 का संशोधन।

4. मूल अधिनियम की धारा 4 में, "छकड़ा या पशु" चिन्ह और शब्दों के स्थान पर "या छकड़ा" शब्द रखे जाएंगे। धारा 4 का संशोधन।

5. मूल अधिनियम की धारा 4 के पश्चात्, निम्नलिखित नई धारा 4-क जोड़ी जाएगी, अर्थात् :— धारा 4-क का अन्तः स्थापन।

"4-क. विक्रय या प्रेषण कारित करने या प्राधिकृत करने हेतु सड़क द्वारा माल का वहन करने वाले व्यक्ति द्वारा कर का संग्रहण.—(1) धारा 4 में किसी बात के प्रतिकूल होते हुए भी, माल के वहन का विक्रय या प्रेषण कारित करने या प्राधिकृत करने हेतु प्रत्येक व्यक्ति, विहित रीति में, यथास्थिति, यांत्रिक यान या छकड़ा जिसमें या जिस पर माल वहन किया जाना है, के प्रभारी व्यक्ति से या माल के प्रभारी व्यक्ति से, धारा 3 के अधीन संदेय कर की रकम का संग्रहण करेगा और ऐसा संग्रहण करने वाला व्यक्ति, विहित रीति में, उसको सरकारी कोष में संदत्त करेगा।

(2) ऐसा संग्रहण करने वाला व्यक्ति, यथास्थिति, यांत्रिक यान या छकड़ा जिसमें या जिस पर माल वहन किया गया है, के प्रभारी व्यक्ति या माल के प्रभारी व्यक्ति को, प्रमाण-पत्र जारी करेगा और प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने पर, अधिनियम की धारा 4 के अधीन कोई कर संदेय नहीं होगा।

(3) यदि कोई व्यक्ति, उप-धाराओं (1) और (2) के किसी या सभी उपबन्धों का उल्लंघन करता है, तो कराधायक प्राधिकारी, सुनवाई का अवसर देने

के पश्चात्, लिखित में आदेश द्वारा, निदेश करेगा कि ऐसा व्यक्ति उप-धारा (1) के अधीन संदेय कर की रकम से दोगुना से अधिक शास्ति के तौर पर संदत्त करेगा।

- (4) धारा 11 के उपबंध, संदेय कर की किसी रकम और/या अधिरोपित किसी शास्ति किन्तु जो इस धारा के अधीन जमा नहीं की गई हो, की वसूली के लिए यथावश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे।”

धारा 5 का
संशोधन।

6. मूल अधिनियम की धारा 5 में,—

- (क) उप-धारा (2) में, “पशु” और “या पशु” चिन्ह और शब्द जहां कहीं ये आते हैं का लोप किया जाएगा; और
- (ख) उप-धारा (3), (4) और (5) में, शब्द “पशु”, चिन्ह और शब्द जहां कहीं यह आता है, का लोप किया जाएगा।

धारा 9 का
संशोधन।

7. मूल अधिनियम की धारा 9 में, उप-धारा (1) और (2) में, “, छकड़ा या पशु” चिन्ह और शब्द जहां कहीं ये आते हैं, के स्थान पर “या छकड़ा” शब्द रखे जाएंगे।

धाराओं 10
और 11 का
प्रतिस्थापन।

8. मूल अधिनियम की धाराओं 10 और 11 के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :—

“10. शास्तियां.—(1) जो कोई भी इस अधिनियम के किन्हीं उपबन्धों या तद्धीन बनाए गए नियमों या किसी ऐसे उपबन्ध या नियम के अधीन किए गए किसी आदेश अथवा दिए गए निदेश का उल्लंघन करता है या दुष्प्रेरण करता है या पालना करने में असफल रहता है, तो वह इस अधिनियम के अधीन कर के संदाय के अतिरिक्त, कर की रकम के दोगुना के बराबर या एक हजार रुपए, जो भी अधिक हो, की शास्ति, संदत्त करने का दायी होगा।

(2) कोई कराधायक प्राधिकारी, संबद्ध व्यक्ति को सुनवाई का युक्तियुक्त अवसर प्रदान करने के पश्चात्, उप-धारा (1) में वर्णित शास्ति अधिरोपित कर नकेगा।

11. कर और शास्ति भू-राजस्व की बकाया के रूप में वसूलीय.—इस अधिनियम के अधीन अधिरोपित किसी कर और शास्ति की रकम, जो देय तारीख के पश्चात् असंदत्त रहती है, भू-राजस्व की बकाया के रूप में वसूलीय होगी।”

AUTHORITATIVE ENGLISH TEXT

Act No. 3 of 2002.

THE HIMACHAL PRADESH TAXATION (ON CERTAIN GOODS CARRIED BY ROAD) AMENDMENT ACT, 2001

(ASSENTED TO BY THE GOVERNOR ON 4TH FEBRUARY, 2002)

**AN
ACT**

to amend the Himachal Pradesh Taxation (on Certain Goods Carried by Road) Act, 1999 (Act No. 16 of 1999).

BE it enacted by the Legislative Assembly of Himachal Pradesh in the Fifty-second Year of the Republic of India, as follows :—

1. This Act may be called the Himachal Pradesh Taxation (on Certain Goods Carried by Road) Amendment Act, 2001.

Short title.

2. In section 2 of the Himachal Pradesh Taxation (on Certain Goods Carried by Road) Act, 1999 (hereinafter referred to as the "principal Act"), in clause (d), for the signs and words "cart, animal and human agency or any other means", the words "or cart" shall be substituted.

Amendment of section 2.

3. In section 3 of the principal Act, in sub-section (1), for the signs and words "cart, animal and human agency or any other means", the words "or cart" shall be substituted.

Amendment of section 3.

4. In section 4 of the principal Act, for the sign and words "cart or animal", the words "or cart" shall be substituted.

Amendment of section 4.

5. After section 4 of the principal Act, the following new section 4-A shall be inserted, namely :—

Insertion of section 4-A.

"4-A. Collection of tax by a person selling or causing or authorising to cause despatch of goods for carriage by road.—(1) Notwithstanding anything to the contrary contained in section 4, every person selling or causing or authorising to cause despatch of goods for carriage by road shall, in the prescribed manner, collect the amount of tax payable under section 3 from the person in charge of the mechanical vehicle or cart in or on which the goods are to be carried or the person-in-charge of the goods, as the case may be, and the person making such collection shall, in the prescribed manner, make payment of the same into the Government Treasury.

(2) The person making such collection shall issue a certificate, in the prescribed manner, to the person-in-charge of the mechanical vehicle or cart in or on which the goods are carried or the person-in-charge

of the goods, as the case may be, and, on the production of the certificate, no tax shall be payable under section 4 of the Act.

- (3) If any person contravenes any or all of the provisions of sub-sections (1) and (2), the Taxing Authority shall, after giving an opportunity of being heard, by an order, in writing, direct that such person shall pay by way of penalty not exceeding twice the amount of tax payable under sub-section (1).
- (4) The provisions of section 11, shall *mutatis mutandis* apply for recovery of any amount of tax payable and/or any penalty imposed but not deposited under this section."

Amend-
ment of
section 5.

6. In section 5 of the principal Act,—

- (a) in sub-section (2), the sign and word "animal" and words "or animal" wherever occurring shall be omitted ; and
- (b) in sub-sections (3), (4) and (5), the sign and word "animal" wherever occurring shall be omitted.

Amend-
ment of
section 9.

7. In section 9 of the principal Act, in sub-sections (1) and (2), for the sign and words "cart or animal" wherever occurring, the words "or cart" shall be substituted.

Substitu-
tion of sect-
ions 10 and
11.

8. For sections 10 and 11 of the principal Act, the following shall be substituted, namely :—

"10. *Penalties.*—(1) Whoever contravenes or abets or fails to comply with any of the provisions of this Act or any rules made thereunder, or any order or direction made under any such provision or rule, shall, in addition to the payment of tax under this Act, be liable to pay a penalty equal to double the amount of tax or a sum of rupees one thousand, whichever is higher.

- (2) Any Taxing Authority may, after affording the person concerned a reasonable opportunity of being heard, impose the penalty mentioned in sub-section (1).

11. *Tax and penalty recoverable as arrears of land revenue.*—The amount of any tax and penalty imposed under this Act, which remains unpaid after the due date shall be recoverable as arrears of land revenue."